न्याय दीपिका: 'प्रमाकरणं प्रमाणम्' की तार्किक परीक्षा

नैयायिकों के प्रमाण लक्षण का संरचनात्मक विच्छेदन (Structural Takedown)

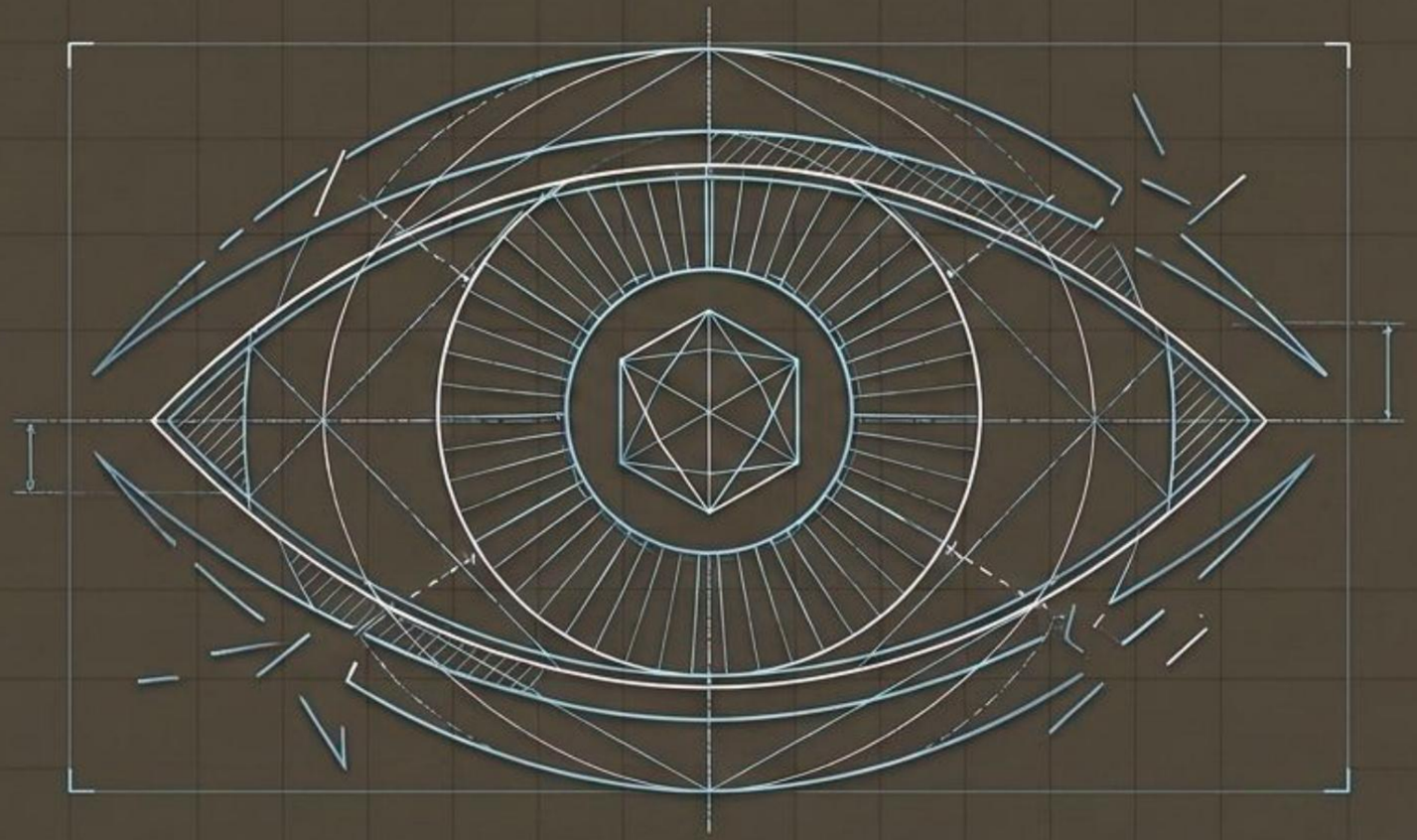

आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति कृत जैन न्याय का सूक्ष्म विश्लेषण।

www.JainKosh.org

नैयायिकों का मूल सूत्र (The Foundational Premise)

प्रमा (ज्ञान/प्रमिति) + करण (साधकतम साधन) = प्रमाण

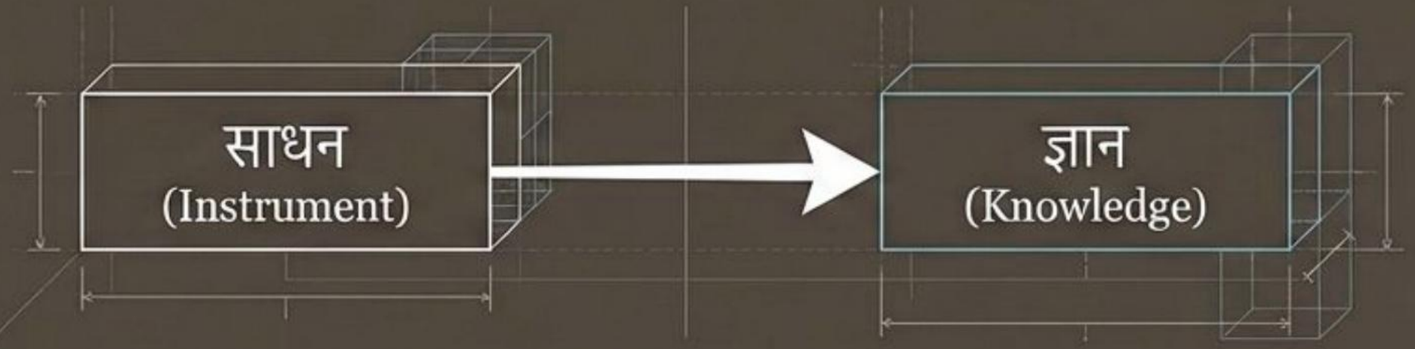

सरल शब्दों में—जिस उत्तम साधन (Instrument) के द्वारा ज्ञान उत्पन्न होता है, वही 'प्रमाण' है।

प्रथम दृष्टि में यह परिभाषा अत्यंत सटीक और निर्दोष प्रतीत होती है। आचार्य इसे 'प्रमाद कृतम लक्षणम' (असावधानीपूर्वक बनाया गया) क्यों कहते हैं?

www.JainKosh.org

नैयायिक के द्वारा मान्य 2 प्रमाण

सामान्य साधन

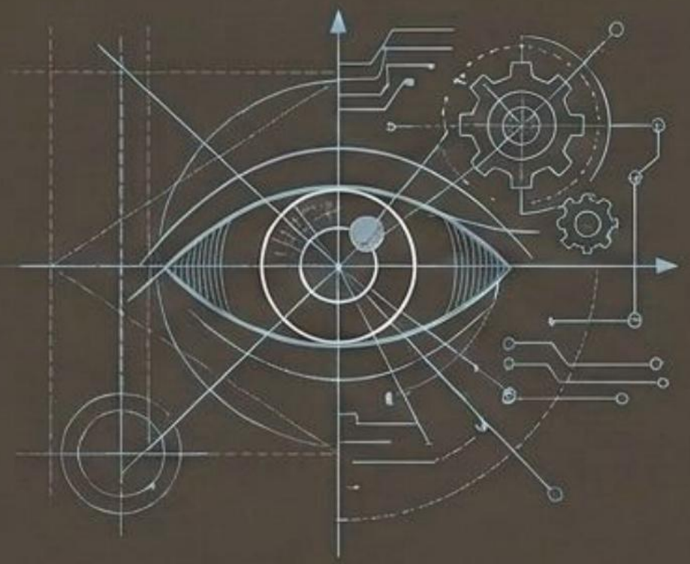

आँखें, मन का सन्निकर्ष (संपर्क)।
ये ज्ञान उत्पन्न करने के 'उपकरण' हैं।

सर्वोच्च प्रमाण

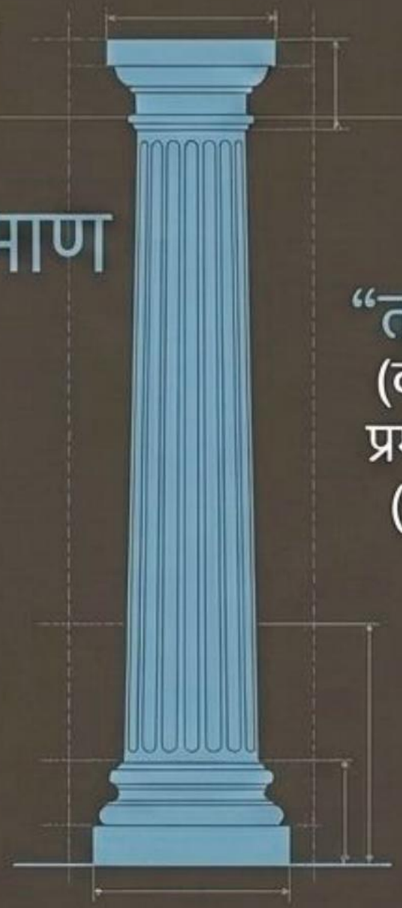

"तन्मे प्रमाणं शिवः"
(वह शिव ही मेरे लिए प्रमाण है) — उदयाचार्य
(न्याय कुसुमांजलि)

नैयायिक दर्शन 'ईश्वर' (सदाशिव/महेश्वर)
को भी प्रमाण मानता है।

यदि 'करण' (साधन) ही प्रमाण है, तो क्या ईश्वर किसी ज्ञान का साधन मात्र है?

www.JainKosh.org

वैचारिक द्वंद्व: करण बनाम अधिकरण (Instrument vs. Base)

करण: जिसके द्वारा कार्य सिद्ध हो (जैसे गाड़ी के पहिए, या ज्ञान के लिए इंद्रियां)।

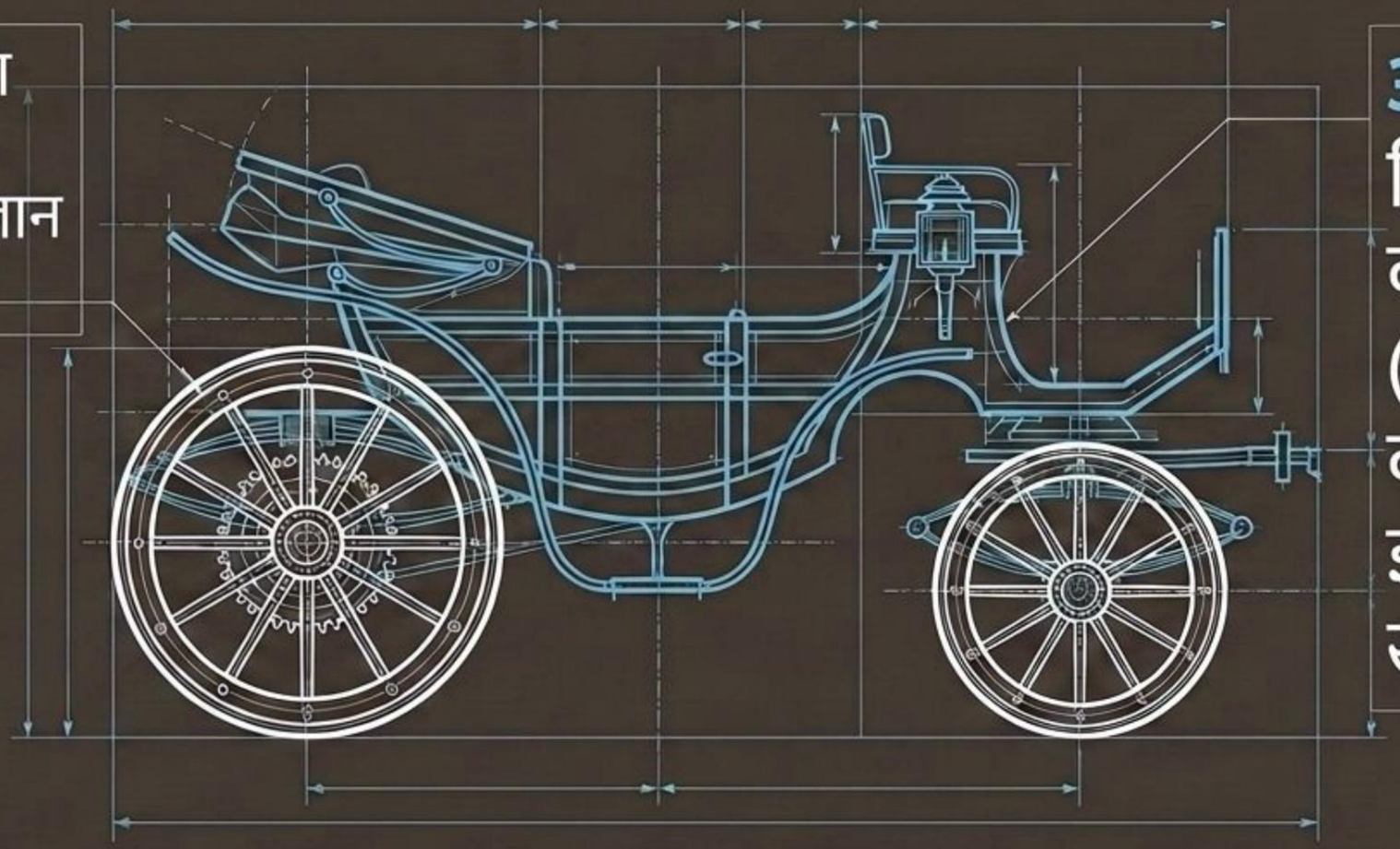

अधिकरण: जिसमें कार्य का आधार हो (जैसे गाड़ी का ढांचा, या ज्ञान का स्वयं खजाना)।

अधिकरणम ही महेश्वर प्रमाया नदुकरणम — ईश्वर प्रमा (ज्ञान) का आधार है, उसका उपकरण नहीं। ईश्वर को जानने के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं है; वह स्वयं ज्ञानस्वरूप है।

www.JainKosh.org

प्रथम पतन: अव्याप्ति दोष (The First Collapse: Under-extension)

अव्याप्ति (Avyapti): जब लक्षण लक्ष्य के एक भाग में ही रहे और संपूर्ण को न छू पाए।

यदि **प्रमाण** केवल **'करण'** (साधन) है, तो **'ईश्वर'** प्रमाण की परिभाषा से बाहर हो जाता है, क्योंकि ईश्वर साधन नहीं, आधार है।

निष्कर्ष: नैयायिकों का मूल लक्षण उनके ही सर्वोच्च प्रमाण (ईश्वर) पर लागू नहीं होता।

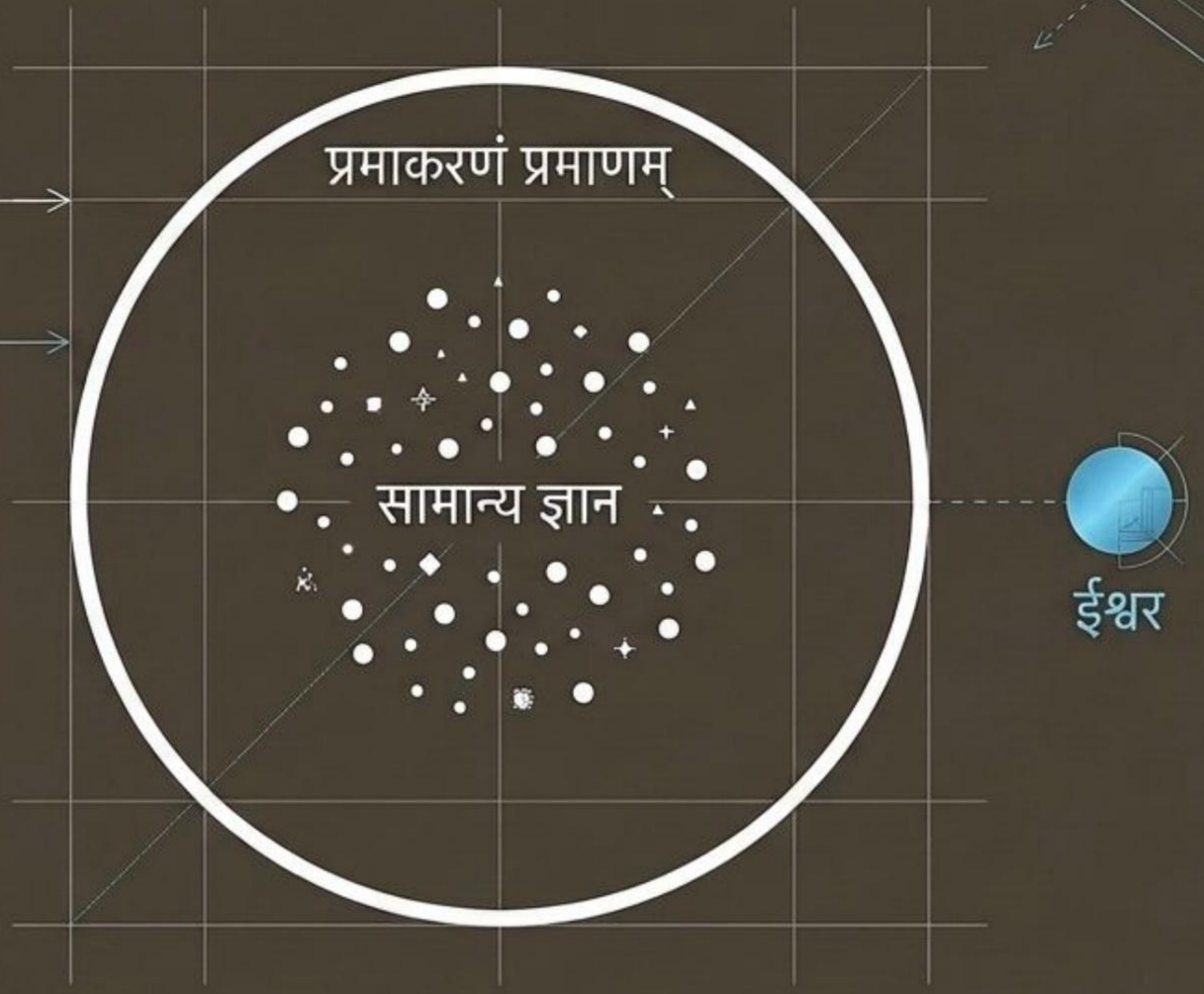

www.JainKosh.org

बालिश प्रयास: 'या' का तर्क (The Childish Patch)

"साधनाश्रयान्यतरत्वे सति प्रमाव्याप्तं प्रमाणम्"

(सर्वदर्शन संग्रह के अनुसार कुछ 'बालिश' विचारकों का मत)

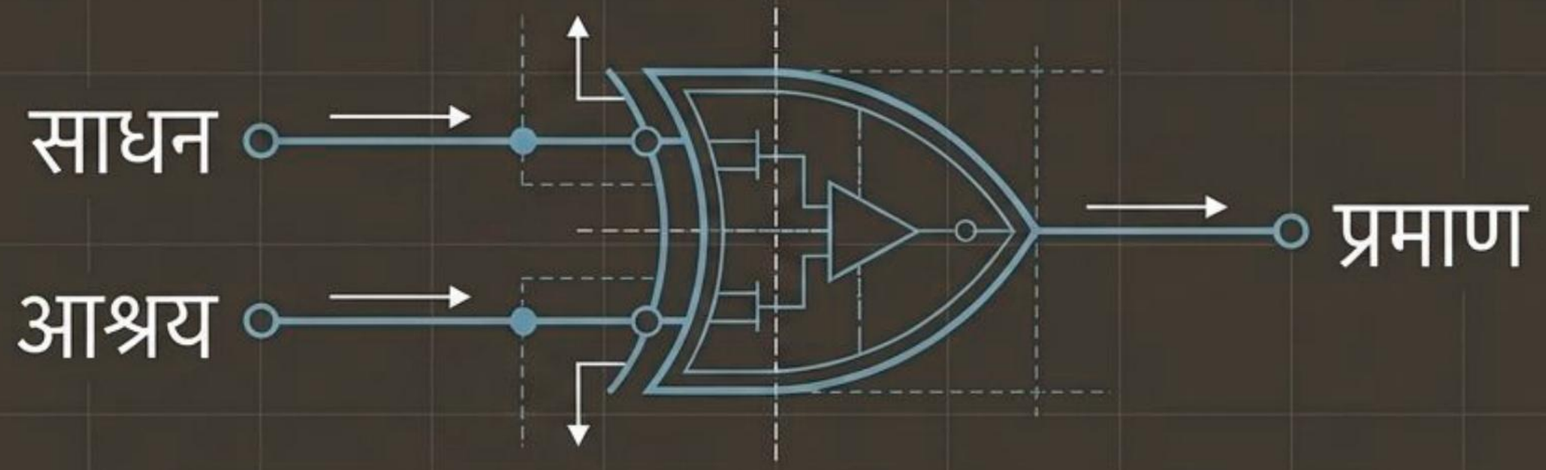

जो ज्ञान का साधन हो [या] ज्ञान का आश्रय (आधार) हो,
उन दोनों में से किसी एक को प्रमाण मान लें।

नैयायिकों ने अपनी परिभाषा को बचाने के लिए इसे दो हिस्सों में बाँट दिया।
लेकिन क्या यह 'पैबंद' काम करेगा?

www.JainKosh.org

द्वितीय दोष: परस्पर अव्याप्ति (Fallacy 2: Mutual Under-extension)

जब **'आश्रय'** (ईश्वर) को प्रमाण मानते हैं, तो **'साधन'** (करण) परिभाषा से छूट जाता है।

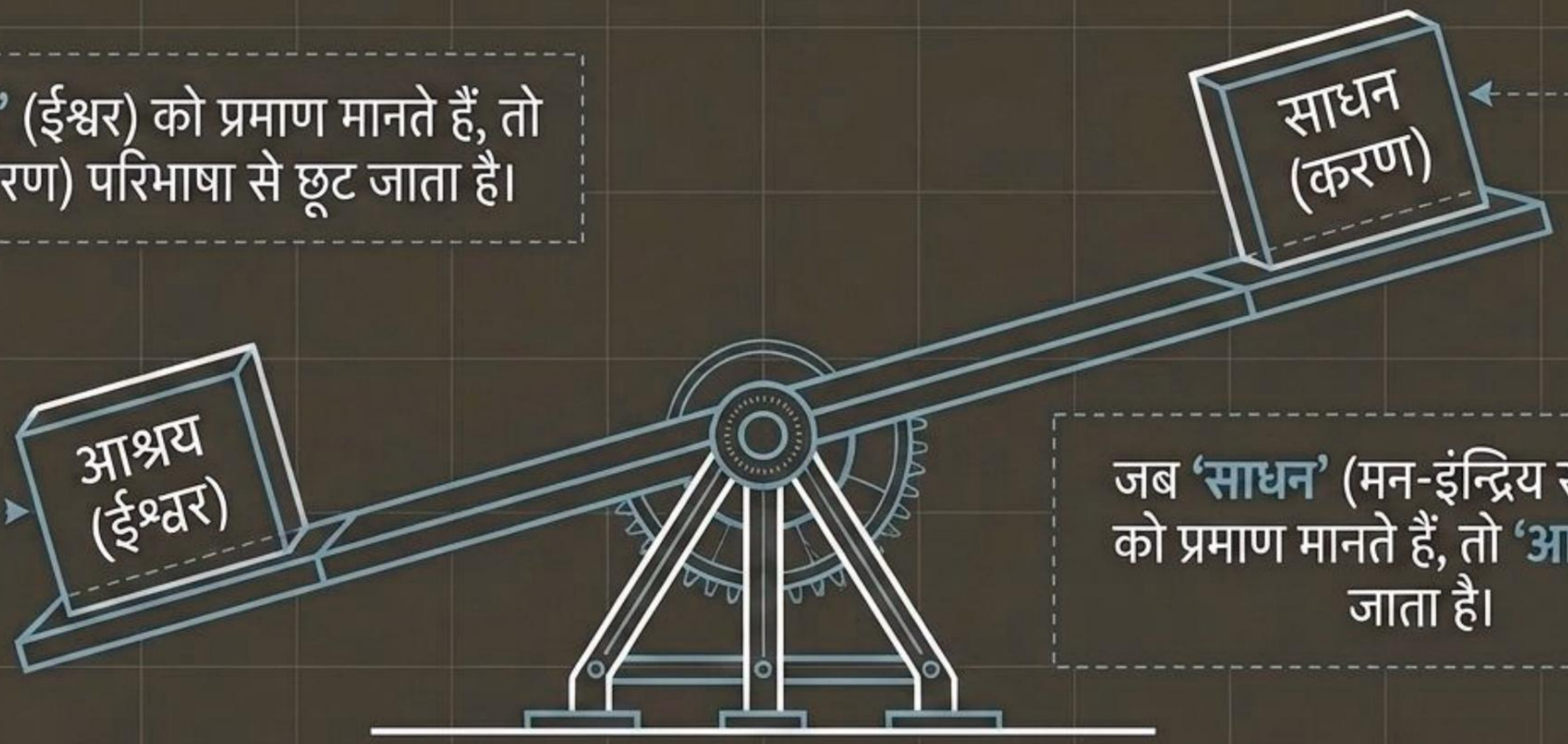

जब **'साधन'** (मन-इंद्रिय सन्निकर्ष) को प्रमाण मानते हैं, तो **'आश्रय'** छूट जाता है।

तथा **परस्पर अव्याप्ति** — एक लक्षण दोनों को एक साथ नहीं साध पाता। आप नाव के दोनों सिरों पर पैर रखकर नहीं बच सकते; दोनों ही स्थिति में अव्याप्ति बनी रहती है।

www.JainKosh.org

अंतिम बचाव: 'और' का तर्क (The Desperate Fix)

तो फिर दोनों को मिला लेते हैं! जो एक ही समय में प्रमा का साधन (करण) [और] आश्रय (अधिकरण) दोनों हो, वही प्रमाण है। (उभय परिकल्पना)

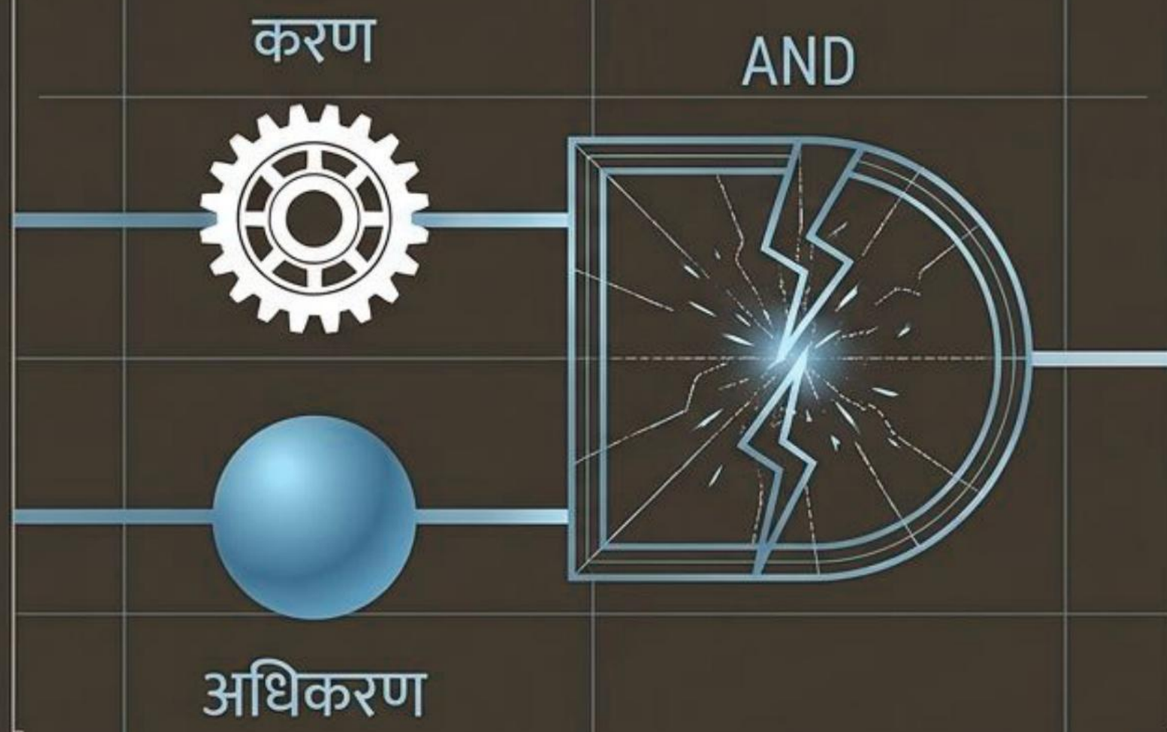

यह मीठे और नमकीन को मिलाकर एक ऐसा नया स्वाद बनाने जैसा है जो अस्तित्व में ही न हो।

www.JainKosh.org

तृतीय दोष: असंभव (The Ultimate Crash: Impossibility)

असंभव (Asambhava): जब लक्षण लक्ष्य में किंचित मात्र भी न पाया जाए।

उभय परिकल्पने च असंभवत्वम् स्पष्टमेव — नैयायिक दर्शन में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो एक ही समय में **'साधन'** (चेतन रहित सन्निकर्ष) और **'आश्रय'** (चेतन ईश्वर) दोनों हो।

निष्कर्ष: बचने के प्रयास में परिभाषा का पूर्णतः पतन हो गया। जो थोड़ा बहुत घटित हो रहा था, वह भी समाप्त हो गया।

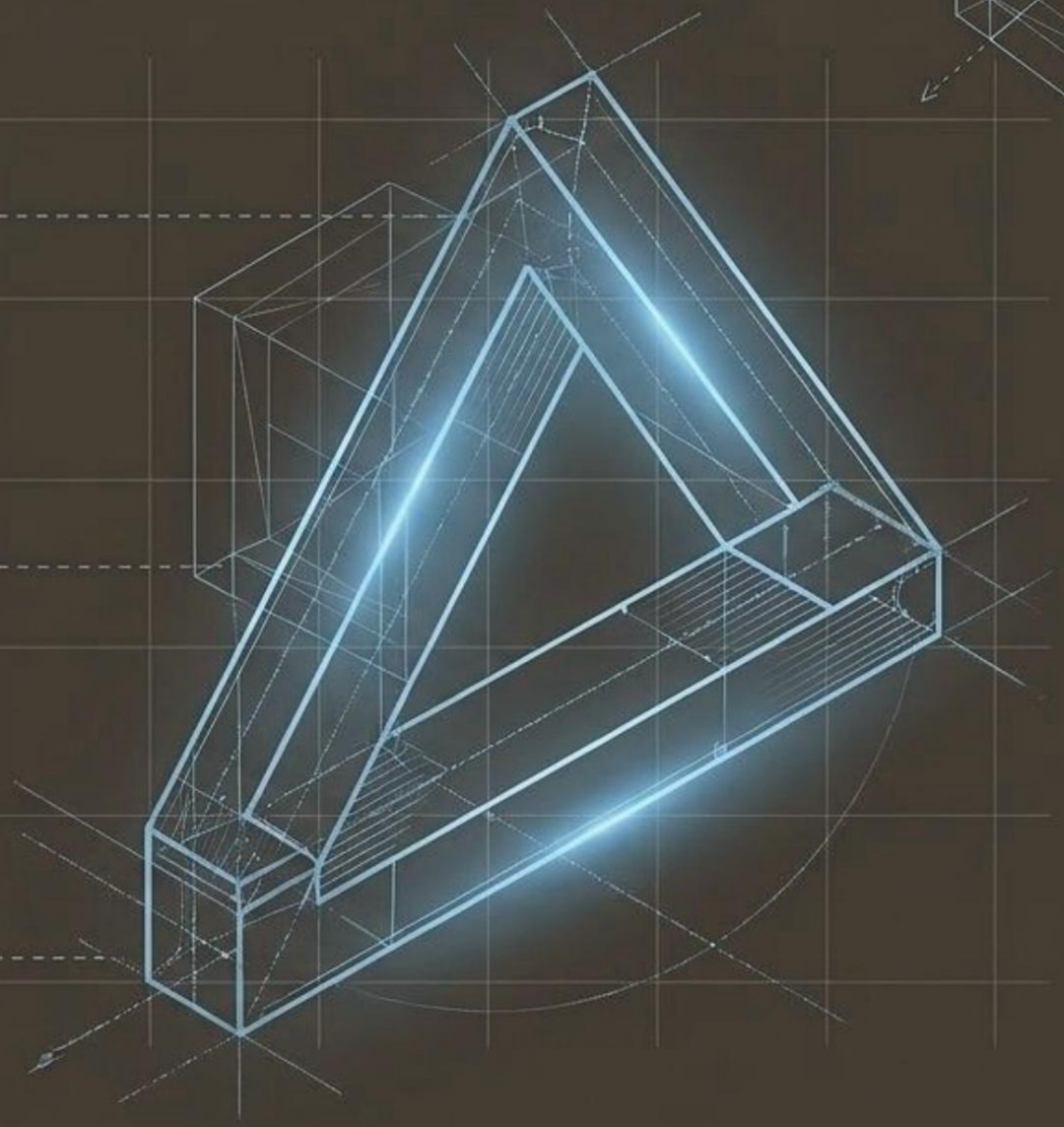

www.JainKosh.org

तार्किक पतन का डायग्नोस्टिक मैट्रिक्स (Analysis of the Collapse)

नैयायिकों ने परिभाषा को बचाने के चक्कर में दोषों को और विशाल कर दिया। एक छोटे 'अव्याप्ति' दोष से बचने का प्रयास 'पूर्ण असंभव' में परिणत हुआ।

प्रयास (Attempt)	सूत्र (Formula)	परिणाम (Resulting Fallacy)	दोष का स्तर (Severity)
केवल करण	करण	अव्याप्ति (ईश्वर छूटा)	मध्यम दोष
करण 'या' आश्रय	करण OR आश्रय	परस्पर अव्याप्ति	गंभीर दोष
करण 'और' आश्रय	करण AND आश्रय	असंभव (अस्तित्व ही नहीं)	पूर्ण पतन (Fatal)

www.JainKosh.org

मूल समस्या क्या है? (The Root Cause of the Collapse)

समस्या केवल शब्दों के चयन में नहीं, बल्कि 'एकांतवाद' (Absolutism) की धारणा में है।

नैयायिकों की यह एकांतवादी जिद कि 'साधन (करण) हमेशा कार्य (ज्ञान) और उसके आधार से सर्वथा भिन्न ही होता है', इस पतन का मुख्य कारण है।

कुल्हाड़ी से लकड़ी काटी जाती है (भिन्न साधन), परंतु क्या ज्ञान भी किसी भिन्न अचेतन साधन से जाना जाता है?

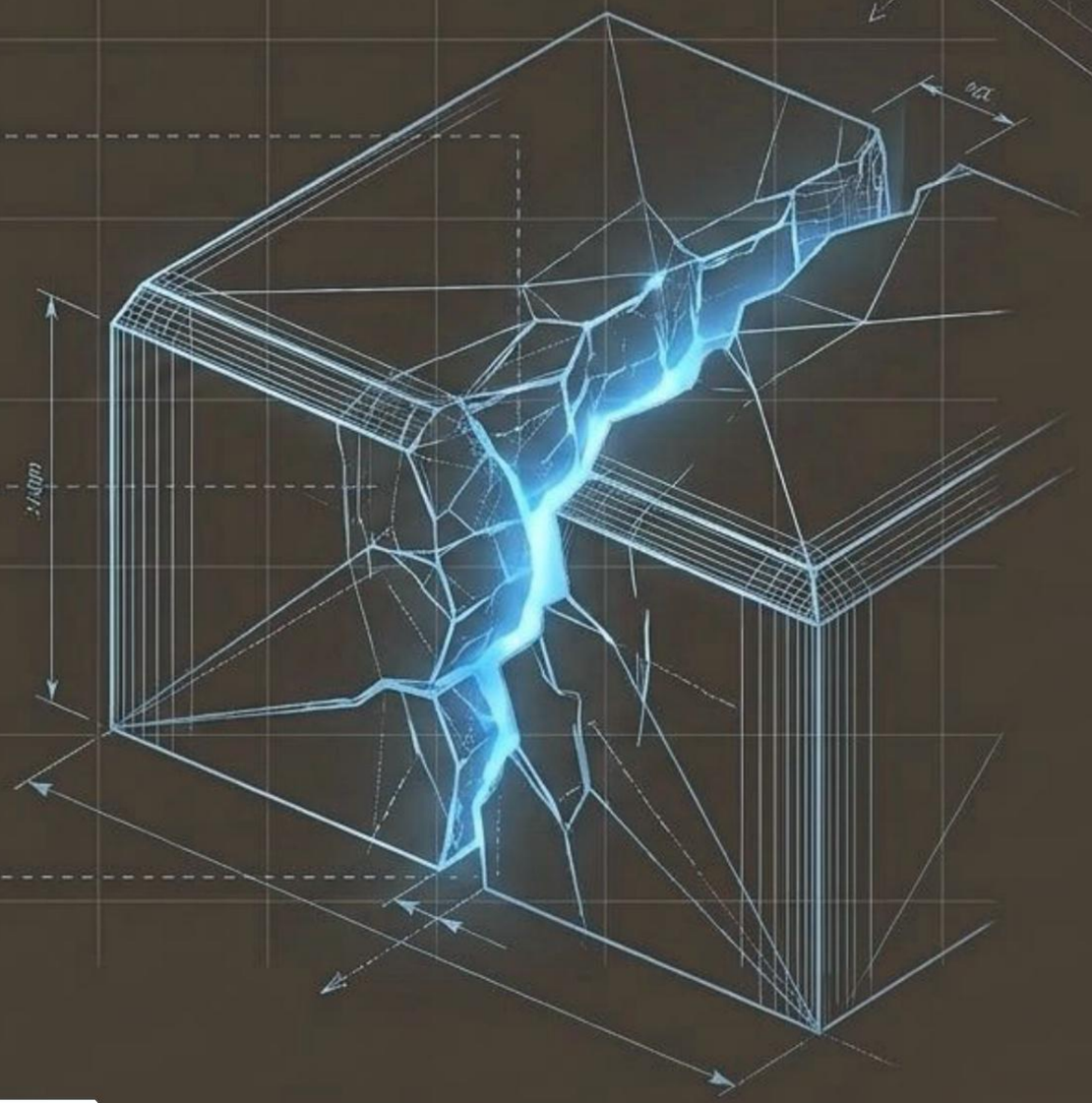

www.JainKosh.org

जैन समाधान: अनेकांतवाद का एकीकरण (The Jain Synthesis)

आत्मा ही ज्ञान है,
आत्मा ही प्रमाण है।

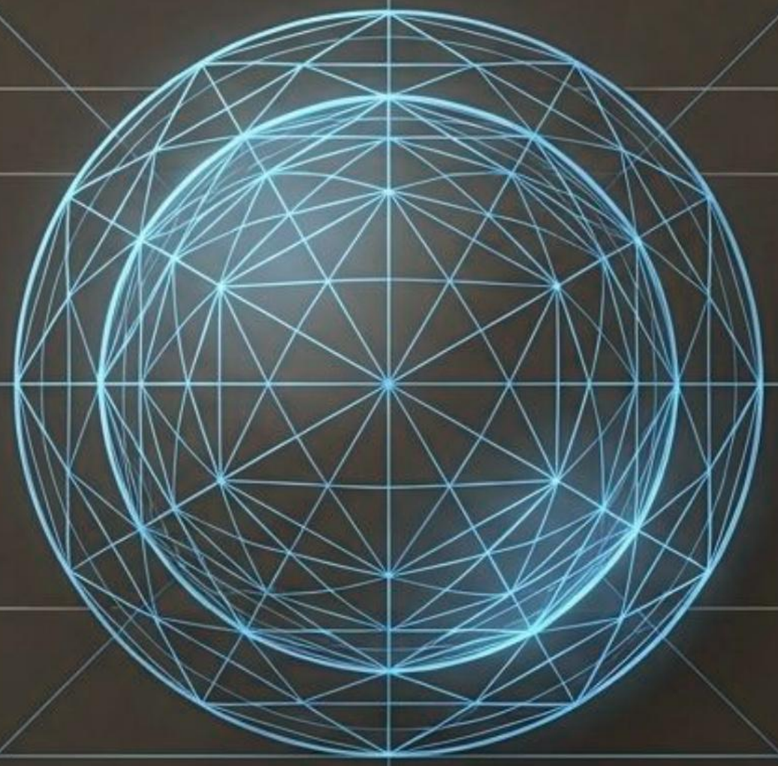

जैन दर्शन अभिन्न साधन को मानता है। 'एक वस्तु अनेकांतात्मक है'। जो ज्ञाता है (अधिकरण), वही ज्ञान का साधन (करण) भी है।

एक ही आत्मा में कर्ता, कर्म, और करण शक्तियों का समावेश होने से न कोई अव्याप्ति होती है, न ही असंभव दोष उत्पन्न होता है।

www.JainKosh.org

'प्रमाकरणं प्रमाणम्' की परीक्षा का सारांश
(Summary of the Dissection)

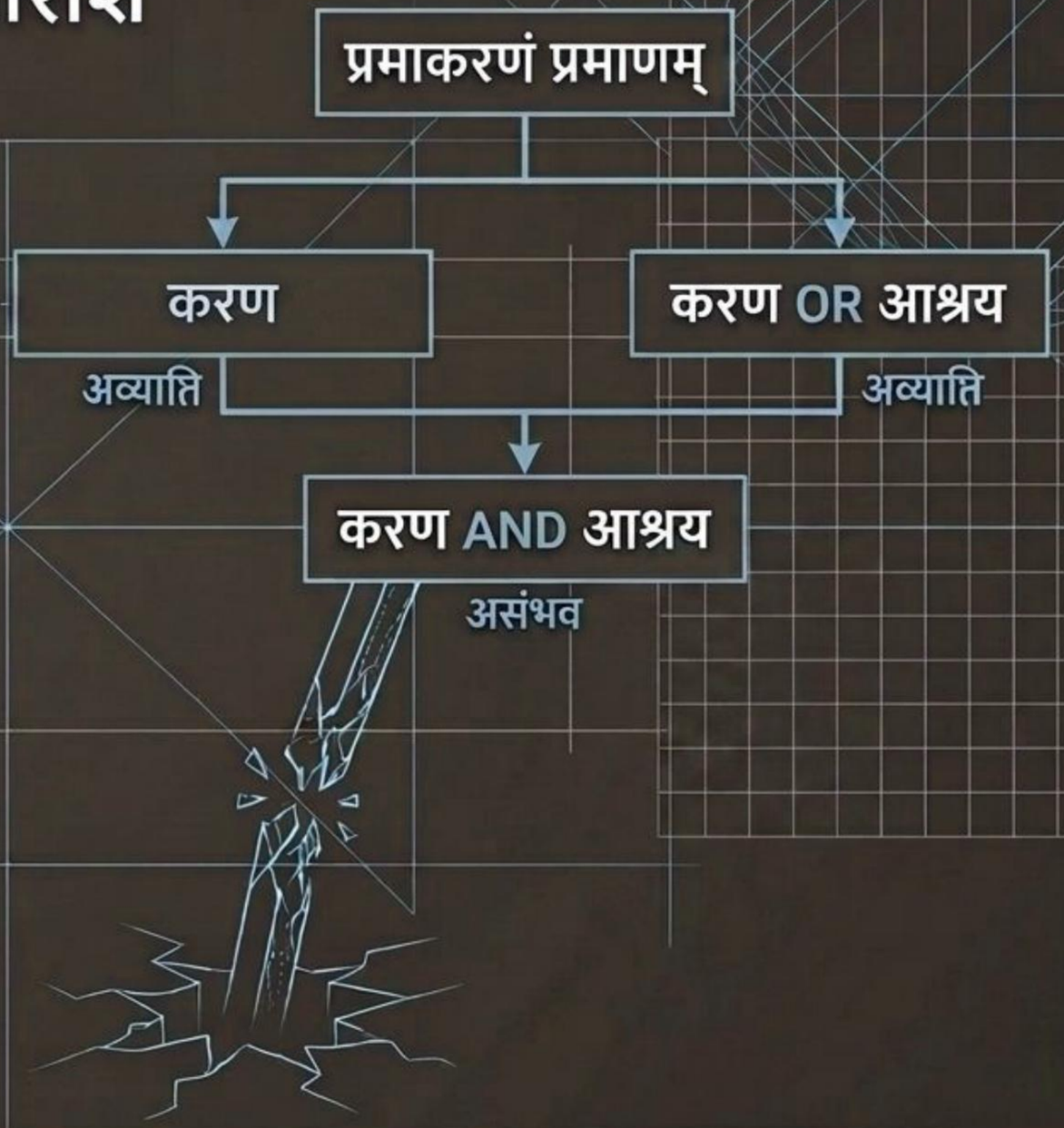

एकांतवादी परिभाषाएं कैसे स्वयं के ही बचाव में अंततः अपने ही तर्कों से खंडित हो जाती हैं, यह परीक्षा उसका उत्कृष्ट उदाहरण।

बिना अनेकांत के, ज्ञान की व्याख्या न तो करण से पूरी होती है, न अधिकरण से। ज्ञान, ज्ञानी से अभिन्न है।

www.JainKosh.org